SEM-3 समाजशास्त्र MJC-3

Date - 31/10/25

Topic :- सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति की विशेषताएँ

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ समाज की संरचना, संगठन, संस्था एवं संबन्धों में होने वाले परिवर्तनों से है। यह एक सतत प्रक्रिया है जो समय, स्थान, संस्कृति एवं मानवीय प्रयत्नों से प्रभावित होती है।

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ :-

→1. सामाजिक परिवर्तन एक सामुदायिक घटना है। परिवर्तन केवल एक व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि यह संपूर्ण समाज या समुदाय को प्रभावित करता है। व्यक्ति के जीवन में आने वाला परिवर्तन तभी सामाजिक माना जाता है, जब वह समाज की संस्थाओं, परंपराओं, मूल्यों और संबन्धों को प्रभावित करे।

→2. सामाजिक परिवर्तन सार्वभौमिक घटना है। सभी समाजों में समय-समय पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्वरूप में परिवर्तन होते रहते हैं। अतः यह एक सार्वभौमिक (universal) प्रक्रिया है।

→3 सामाजिक परिवर्तन असमान गति व तुलनात्मक होता है। सामाजिक परिवर्तन की गति की दर समाज के विभिन्न कों, समुह या क्षेत्रों में अलग-अलग हो सकती है। उदाहरण - शहरी क्षेत्रों में परिवर्तन की गति ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में तीव्र होती है।

→4. सामाजिक परिवर्तन की गति व प्रकृति समय-काल से प्रभावित होती है - परिवर्तन की गति, समय, परिस्थिति, और ऐतिहासिक घटनाओं से प्रभावित होती है। 1947 के बाद स्वतंत्रता प्राप्ति ने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन की गति को तीव्र बना दिया।

→ 5. सामाजिक परिवर्तन अनिवार्य नियम है। — कोई भी समाज स्थायी और स्थिर नहीं होता। हर समाज में परिवर्तन निरंतर होते रहते हैं।

→ 6 सामाजिक परिवर्तन की निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। — सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति और दिशा का सटीक अनुमान लगाना कठिन होता है। कोई भी व्यक्ति या समूह ये नहीं कह सकता कि भविष्य में समाज किस प्रकार बदलेगा। परिवर्तन अनिश्चित और अप्रत्याशित होते हैं।

Scanned with CamScanner